HELPING HAND

HH

ALWAYS BE FIRST

Vansh Dwivedi
(Helping Hand)

BA-I (2) (FREE NOTES) (Subsidiary Group of Helping Hand.)

WhatsApp group

Scan this QR code using the WhatsApp camera to join this group

UoA :Helping hand

WhatsApp group

Scan this QR code using the WhatsApp camera to join this group

(ख) निम्नलिखित प्रकृति–प्रत्ययों से निष्पन्न पदों का निर्देश कीजिए– 1 × 5 = 5

(क) पठ् + अनीयर्

(ख) पत् + क्त

(ग) लिख् + शतृ

(घ) अधिकृ + ल्यप्

(ङ) युवन् + ति

B.A. (Part II) Examination, 2012

(New Course)

SANSKRIT

(FIRST PAPER)

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद करें– 8 × 2 = 16

(क) यस्य च मदकलकरिकुम्भपीठपाटनमाचरता लग्नस्थूलमुक्ताफलेन दृढमुष्टि–निष्पीडननिष्ठयूतधाराजलबिन्दुदन्तुरेणेव कृपाणेनाकृष्यमाण सुभटोरः कपाट–विघटितकवचसहस्रान्धकारमध्यवर्त्तिनी करिकरटगलितमदजलासारदुर्दिना–स्वभिसारिकेव समरनिशासु समीपमसकृदाजगाम राजलक्ष्मीः।

(ख) आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्तकुवलयदलकोमलेन पाणिना जर्जरित्तमुखभागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिममाजघान, येन सकलमेव तद्राजकम् एकपदे, वनकरियूथमिव तालशब्देन, तेन वेणुलताध्वनिना युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुखमासीत्।

(ग) ततस्ताः काश्चिन्मरकतकलसप्रभाश्यामायमाना नलिन्य इव मूर्तिमत्यः पत्रपुटैः, काश्चिद्रजतकलसहस्ता रजन्य इव पूर्णचन्द्रमण्डलविनिर्गतेन ज्योत्स्नाप्रवाहेण, काश्चित्कलसोत्क्षेपश्रमस्वेदार्द्रशरीरा जलदेवता इव स्फाटिकैः कलसैस्तीर्थजलेन, काश्चिन्मलयसरित इव चन्दनरसमिश्रेण सलिलेन, काश्चिज्जाड्यमपनेतु–माक्षिप्तबालातपेनेव दिवसश्रिय इव कनककलसहस्ताः कुङ्कुमजलेन वाराङ्गनाः क्रमेण राजान–मभिषिषिचुः।

(घ) तस्याञ्च दण्डकारण्यान्तः पाति, सकलभुवनविख्यातम्, उत्पत्तिक्षेत्रमिव भगवतो धर्मस्य, सुरपतिप्रार्थनापीत–सकलसागरसलिलस्य, जठरानलजीर्णवातापिदानवस्य, सुरासुरमुकुट–मकरपत्रकोटिचुम्बितचरणजसो दक्षिणाशावधू मुखविशेषकस्य, सुरलोकादेकहुङ्कारनिपाति तनहुषप्रकटप्रभावस्य भगवतो महामुनेरगस्त्यस्य गोदावर्या परिगतमाश्रमपदमासीत्।

Vansh Dwivedi Helping Hand

2. किसी एक गद्य खण्ड की संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8

(क) यस्मिंश्च राजनि जितजगति परिपालयति महीं चित्रकर्मसु वर्णसङ्कराः, रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढबन्धाः, शास्त्रेषु चिन्ताः, स्वप्नेषु विप्रलम्भाः, छत्रेषु कनकदण्डाः, ध्वजेषु प्रकम्पाः, गीतेषु रागविलसितानि, करिषु मदविकाराः, चापेषु गुणच्छेदाः,गवाक्षेषु जालमार्गाः, शशिकृपाणकवचेषु कलङ्काः, रतिकलहेषु दूतप्रेषणानि, सार्यक्षेषु शून्यगृहा न प्रजानामासन्।

(ख) एवञ्च क्रमेण निर्वर्तिताभिषेको विषधरनिर्मोकपरिलघुनी धवले परिधाय धौते वाससी शरदम्बरैकदेश इव जलक्षालननिर्मलतनुः अतिधवलजलधरच्छेदशुचिना दुकूलपटपल्लवेन, तुहिनगिरिरिव गगनसरित्स्रोतसा कृतशिरोवेष्टनः सम्पादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्।

3. प्रश्न संख्या 1 और 2 के किसी एक अवतरण के अधोरेखाङ्कित समासों का विग्रह तथा समास का नाम लिखिये। $2 \times 2 = 4$

4. 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' सूक्ति के आधार पर कादम्बरी कथा की समीक्षा कीजिए। 7

अथवा

'कादम्बरीकथामुखम्' के अनुसार 'अगस्त्य आश्रम' का वर्णन कीजिए।

5. अधोलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 8

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।

अथवा

त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखःकिं पुनर्यस्तथोच्चैः।।

6. अधोलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए 7

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी –
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
सद्यःपाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।

अथवा

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2012

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न के निर्धारित अंक उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं तीन का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– 3×6=18

(क) देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्
देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम्
देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।

(ख) प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि–
क्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

(ग) यो हत्वाहिमरिणात् सप्तसिन्धून्
यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान
संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः।।

(घ) अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा
भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।

(ङ) एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

Vansh Dwivedi Helping Hand

2. अपनी पाठ्यपुस्तक में संकलित विष्णुसूक्त अथवा 'पुरुषसूक्त' का सारांश लिखिए।

3. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए $2 \times 2 = 4$

(क) ऋजूयताम्

(ख) कुचर

(ग) जजान

(घ) राष्ट्री

(ङ) विश्वा

(च) जनास

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की हिन्दी में सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए। $2 \times 6 = 12$

(क) वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्।
तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम्।।

(ख) स्वर्गेलोके न भयं किञ्चनास्ति,
न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(ग) न साम्परायः प्रतिभाति बालं
प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी
पुनः पुनर्वशमापद्यते मे।।

(घ) उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारानिशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिये। $2\frac{1}{2} \times 2 = 5$

(क) अशनायापिपासे

(ख) सृङ्का

(ग) श्रेयः प्रेयः

(घ) इष्टापूर्ते

6. अधोलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों को निर्देशानुसार उत्तर लिखिए $5 \times 1 = 5$

(क) विष्णु सूक्त के ऋषि हैं

(i) नारायण

(ii) दीर्घतमा

(iii) विश्वामित्र

(iv) भरद्वाज

(ख) 'गृत्समद' ऋषि हैं–

(i) विश्वेदेवा सूक्त के

(ii) प्रजापति सूक्त के

(iii) पुरुष सूक्त के

(iv) इन्द्र सूक्त के

(ग) 'शिवसंकल्प सूक्त' का देवता है

(i) आत्मा

(ii) वाणी

(iii) मन

(iv) शरीर

(घ) 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' कथन है–

(i) यमराज का

(ii) वाजश्रवा का

(iii) नचिकेता का

(iv) इनमें से किसी का नहीं

(ङ) 'कठोपनिषद्' सम्बद्ध है।

(क) ऋग्वेद से

(ख) शुक्लयजुर्वेद से

(ग) अथर्ववेद से

(घ) कृष्ण यजुर्वेद से

Vansh Dwivedi Helping Hand

SANSKRIT (THIRD PAPER)-2012

Time : Three hours] [Maximum Marks : 5

निर्देश : सभी प्रश्न हल करें। प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प दिये गये हैं और यथास्था अंक निर्देश किया गया है।

इकाई – एक

1. संस्कृत–महाकाव्य के उद्भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए। 1

अथवा

संस्कृत–नाटकों के उद्भव एवं विकास का परिचय दीजिए।

इकाई–दो

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर सीमाक्षात्मक टिप्पणी लिखिए– 5×2=1

(क) कुमारसम्भव्।

(ख) मेघदूतम्।

(ग) हर्षचरितम्।

(घ) शूद्रक।

(ड.) कथासरित्सागरम्।

इकाई–तीन

3. सूत्रोल्लेख पूर्वक सन्धि प्रक्रिया समझाते हुए निम्नांङ्कित में से किन्हीं तीन क सन्धि विच्छेद कीजिए 3×3=

(क) गङ्गोदकम्।

(ख) प्रार्च्छति।

(ग) दैत्यारिः।

(घ) तल्लयः।

(ड.) काँस्कान।

(च) शिवोऽर्च्यः।

इकाई–चार

4. (क) सन्धि विषयक समुचित सूत्रों का उल्लेख करते हुए निम्नांकित में से किन्हीं दो में सन्धि कीजिए और साधनिका प्रस्तुत कीजिए – 2 × 2 = 4

(क) नै + अकः।

(ख) अमी + ईशाः।

(ग) षड् + नवतिः।

(घ) पुनर् + रमते।

(ख) अधोलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए– 2 × 2 = 4

(क) पूर्वत्रासिद्धम्।

(ख) झलां जशोऽन्ते।

(ग) अचोऽन्त्यादि टि।

(घ) स्तोः श्चुनाश्चुः।

(ग) अधोलिखित में से किन्ही दो संज्ञाओं का सोदाहरण परिचय दीजिए– 1½+2=3

(क) गुण।

(ख) सवर्ण।

(ग) प्लुत।

(घ) विप्रतिषेध।

इकाई–पाँच

5. (क) अधोलिखित में धातु और प्रत्यय विभक्त कीजिए–– 1 × 4 = 4

(क) कुर्वन्।

(ख) दत्तः।

(ग) पीत्वा।

(घ) गन्तव्यम्।

(ड.) हसितुम्।

(च) जेतव्यम्।

(छ) पक्वः।

(ज) पठितवान्।

(ख) निम्नलिखित धातु–प्रत्यय समूह से निष्पन्न शब्दों में से किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।– 1 × 4 = 4

(क) पठ् + तव्यत्।
(ख) गम् + क्त्वा।
(ग) भू + क्त।
(घ) चि + यत्।
(ङ) जी + तुमुन्
(च) सेव् + शानच्
(छ) हृ + ण्यत्
(ज) भिद् + केलिमर्

(ग) निम्नांकित में से किन्हीं दो में–प्रकृति–प्रत्यय (स्त्रीप्रत्यय) का निर्देश कीजिए– 1 × 2 = 2

(क) सर्वा।
(ख) देवी।
(ग) गार्गी।
(घ) कारभोरू।

B.A. (Part II) Examination, 2013

(New Course)

SANSKRIT

(FIRST PAPER)

(केवल नियमित परीक्षार्थियों के लिए)

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद करें– 8 × 2 = 16

(क) आसीदशेषनरपति शिरःसमभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः चतुरुदधिमालामेखलायाः भुवो भर्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, चक्रधर इव करकमलोपलक्ष्यमाणशङ्खचक्रलाञ्छनः, हर इव जितमन्मथः गुह इवाप्रतिहतशक्तिः, कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः, जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः गङ्गाप्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तः, धौरेयः साहसिकानाम् अग्रणीर्विदग्धानाम्, वैनतेय इव नितानन्दजननः, वैन्य इव चापकोटि समुत्सारित सकलारातिकुलाचलो राजा शूद्रको नाम।

(ख) एकदा तु नातिदूरोदिते नवनलिनदल सम्पुटभिदि किञ्चिन्मुक्तपाटलिम्नि भगवति सहस्रमरीचिमालिनि, राजानमास्थानमण्डपगतमनाजनविरुद्धेन वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेण, सन्निहितविषधरेव चन्दनलता–भीषणरमणीयाकृतिः, अविरलचन्दनानुलेपन–धवलिस्तनतटा, उन्मज्जदैरावत–कुम्भमण्डलेव मन्दाकिनी, चूड़ामणिसङ्क्रान्तिप्रतिबिम्बच्छलेनराजाज्ञेव मूर्तिमति राजभिः शिरोभिरुह्यमाना, शरदिव कलहंसधवलाम्बरा, विन्ध्यभूमिरिववेत्रलतावती राज्याधिदेवतेव विग्रहिणी, प्रतीहारी समुपसृत्य क्षितितलनिहितजानुकरकमला सविनयमब्रवीत्।

(ग) यत्र च दशरथवचनमनुपालयन्नुत्सृष्टराज्यो दशवदनलक्ष्मीविभ्रमविरामो रामो महामुनिरगस्त्यमनुचरन् सहसीतया लक्ष्मणोपरचितपर्णशालः पञ्चवट्यां कञ्चित्कालं सुखमुवास। चिरशून्ये अद्यापि यत्र शाखानिलीननिभृतपाण्डुकपोतवङ्वतये लग्नतापसाग्निहोत्रधूमराजय इव लक्ष्यन्ते तखः। बलिकर्मकुसुमान्युद्धरन्त्याः सीतायाः करतलादिव संक्रान्तो यत्र रागः स्फुरति लताकिसलयेषु।

Vansh Dwivedi Helping Hand

(घ) सहसैव तस्मिन् महावने संत्रासितसकलवनचरः सरभससमुत्पतत्पतत्रिपक्षपुटशब्दसंततः भीतकरिपोतचीत्कारपीवरः प्रचलितमत्तालिकुलक्वणितमांसलः परिभ्रमदुद्घोणवनवराहघर्घरो गिरिगहासुप्तप्रबुद्ध–सिंहनिनादोपबृंहितः कम्पयन्निव तरून् भगीरथावतार्यमाणगङ्गा प्रवाहकलकलबहली–भीतवनदेवताकर्णितो मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत् ।

2. किसी एक गद्यखण्ड की संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8

(क) देव द्वारिस्थिता सुरलोकमारोहतस्त्रिशङ्कोरिव कुपित शतमखहुङ्कारनिपातिता राज्यलक्ष्मीर्दक्षिणापथादागता चाण्डालकन्यका पञ्जरस्थं शुकमादाय देवं विज्ञापयति "सकलभुवनतलसर्वरत्नानाम् उदधिरिवैकभाजनं, विहङ्गमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभुवनतलरत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमेनमादायागताहमिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुमिति" एतदाकर्ण्य "देवः प्रमाणम्" इत्युक्त्वा विरराम।

(ख) तस्यचातिविजिगीषुतया महासत्त्वतया च तृणमिव लघुवृत्ति स्त्रैणमाकलयतः प्रथमे वयसि वर्त्तमास्यापि रूपवतोऽपि सन्तानार्थिभिरमात्यैपरेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इव आसीत्।

3. प्रश्न संख्या 1 और 2 के किसी एक अवतरण के अधोरेखाङ्कित पदों का समास तथा समास का नाम लिखिये। 2 × 2 = 4

4. 'कादम्बरीकथामुखम्' के अनुसार 'विध्याटवी का वर्णन कीजिए। 7

अथवा

बाणभट्ट की काव्यकला का वर्णन करते हुए सिद्ध कीजिये कि बाणभट्ट को प्रकृतिचित्रण में नैपुण्य प्राप्त था।

5. अधोलिखित श्लोक में से किसी एक का हिन्दी में अनुवाद करिये : 8

प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्।
सः प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।।

अथवा

गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्मापि प्रकृतिसुभो लप्स्यते ते प्रवेशम्।
तस्मादस्याः कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न
धैर्यान्मोधीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि।।

6. अधोलिखित श्लोक की संरकृत में व्याख्या कीजिए 7

धूम ज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

अथवा

नीपं दृष्ट्वां हरिकपिशं केसरैरर्धरुदै–
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छन्।
जग्ध्वारण्येष्वधिक सुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जललवमुचतः सूचयिष्यन्ति मार्गम्।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2013

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न के निर्धारित अंक उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं तीन का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– 3×6=18

(क) भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु वांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।।

(ख) यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो
यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान
यो अपां नेता स जनास इन्द्रः।।

(ग) येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा
येन स्वः स्तभितं येन नाकः।

Vansh Dwivedi Helping Hand

यो अन्तरिक्षे रजसे विमानः

कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(घ) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् शाङ्गुलम्।।

(ङ) येनेदं भूतं भुवनं भविष्य

त्परिगृहीममृतेन सर्वम्।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

2. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए : $2 \times 2 = 4$
   - (क) अश्वास :
   - (ख) कर्णेभिः
   - (ग) जजान
   - (घ) तुष्टुवांसः
   - (ङ) देवहितम्
   - (च) विश्वत :

3. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर इन्द्रसूक्त अथवा प्रजापतिसूक्त का सारांश लिखिए। 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग विशद व्याख्या कीजिए। $2 \times 6 = 12$

(क) आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां च
इष्टापूर्ते पुत्र पशूँश्च सर्वान्।
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे।।

(ख) अजीर्य ताम मृतानामुपेत्य
जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन्।
अभिध्यायन्वर्णरतिप्रमोदान्
अतिदीर्घे जीविते को रमेत।।

(ग) अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः
स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढाः
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

(घ) ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके
गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति
पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिये। $2\frac{1}{2} \times 2 = 5$
   - (क) योगक्षेमम्
   - (ख) साम्परायः
   - (ग) आशा–प्रतीक्षे
   - (घ) श्वोभावाः

6. अधोलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का समुचित विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए : $5 \times 1 = 5$

(क) इन्द्र सूक्त के द्रष्टा ऋषि हैं :
   - (i) गृत्समद
   - (ii) नारायण
   - (iii) गौतम
   - (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) प्रजापति सूक्त में प्रयुक्त 'कस्मै' पद से अभिधेय देवता हैं :
   - (i) इन्द्र
   - (ii) शिवसङ्कल्प
   - (iii) प्रजापति
   - (iv) विष्णु

(ग) वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख है :
   - (i) विश्वेदेवा सूक्त में
   - (ii) पुरुष सूक्त में
   - (iii) शिवसङ्कल्पसूक्त में
   - (iv) वाक् सूक्त में

Vansh Dwivedi Helping Hand

(घ) वेद सर्वश्रेष्ठ मानते है :

(i) ब्रह्मचर्य को

(ii) आत्मा को

(iii) कठोपनिषद् को

(iv) ओऽम् को

(ङ) वाजश्रवस् ऋषि ने यज्ञ किया था :

(क) अश्वमेध

(ख) विश्वजित्

(ग) पुत्रेष्टि

(घ) वाजपेय

SANSKRIT (THIRD PAPER)-2013

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

निर्देश : सभी प्रश्न हल करें। प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प दिये गये हैं और यथास्थान अंक्क निर्देश किया गया है।

इकाई–एक

1. संस्कृत–गद्यकाव्य के विकास पर प्रकाश डालिये। 10

अथवा

संस्कृत जन्तु–कथा साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर एक निबन्ध लिखिये।

इकाई–दो

2. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए– 5×2=10

(क) शिशुपालवध काव्यम्

(ख) भास

(ग) सौन्दरनन्दकाव्यम्

(घ) सोमदेवसूरि

(ङ) वेणीसंहार

इकाई–तीन

3. सूत्रोल्लेख पूर्वक सन्धि प्रक्रिया समझाते हुए निम्नांङ्कित में से किन्हीं तीन का सन्धि विच्छेद कीजिए 3×3=9

(क) सुद्ध्युपास्यः

(ख) शिवेहि

(ग) वाग्घरिः

(घ) सन्नच्युतः

(ङ) देवा इह

(च) अहरह :

इकाई–चार

4. (क) सन्धि विषयक समुचित सूत्रों का उल्लेख करते हुए निम्नांङ्कित में से किन्हीं दो में सन्धि कीजिए और साधनिका प्रस्तुत कीजिए – 2 × 2 = 4

(क) कृष्ण + भटद्धिः

(ख) हरे + अव

(ग) एतद् + मुरारि :

(घ) विष्णु : + त्राता

(ख) अधोलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए– 2 × 2 = 4

(क) तपरस्तत्कालस्य

(ख) एङि पररूपम्

(ग) शश्छोऽटि

(घ) अतोरोरप्लुतादप्लुत

(ग) निम्नलिखित में से किन्ही दो संज्ञाओं का सोदाहरण परिचय दीजिए– 1½+2=3

(क) लोप

(ख) उपदेश

(ग) अनुनासिक

(घ) प्रगृह्य

इकाई–पाँच

5. (क) अधोलिखित में धातु और प्रत्यय विभक्त कीजिए– 1 × 4 = 4

(क) प्रवचनीय :	(ङ.) भूतवत
(ख) कार्यम्	(च) पठ्यमानः
(ग) उपलभ्य	(छ) द्रष्टुम
(घ) पूजितव्यः	(ज) गतम्

(ख) निम्नाङ्कित धातु–प्रत्यय समूह से निष्पन्न शब्दों में से किन्हीं **चार** का उल्लेख कीजिए।– 1 × 4 = 4

(क) नी + तव्य	(ङ) भू + यत्
(ख) दृश् + अनीयर्	(च) चर् + तव्यत्
(ग) त्यज् + क्तवतु	(छ) दा + शानच्
(घ) श्रु + ण्यत्	(ज) स्ना + क्त

(ग) अधोलिखित में से किन्हीं दो में–प्रकृति–प्रत्यय (स्त्रीप्रत्यय) का निर्देश कीजिए– 1 × 2 = 2

(क) सूर्या

(ख) मृद्वी

(ग) यवनानी

(घ) श्वश्रू :

B.A. (Part II) Examination, 2014

(New Course)

SANSKRIT

(FIRST PAPER)

(केवल नियमित परीक्षार्थियों के लिए)

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– $8 \times 2 = 16$

(क) यस्मिंश्च राजनि <u>जितजगति</u> परिपालयति महीं चित्रकर्मसु वर्णसङ्करा, रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढबन्धाः, शास्त्रेषु चिन्ताः, स्वप्नेषु विप्रलम्भाः, छत्रेषु कनकदण्डाः, ध्वजेषु प्रकम्पाः, गीतेषु रागविलासितानि, करिषु मदविकाराः, चापेषु गुणच्छेदाः, गवाक्षेषु जालमार्गाः, शशि कृपाणकवचेषु कलङ्का, रतिकलहेषु दूत–प्रेषणानि, सार्यक्षेषु शून्यगृहा न प्रजानामासन्।

(ख) प्रविश्य च सा नरपतिसहंस्रमध्यवर्तिनमशनिभय पुञ्जितकुलशैल– मध्यगतमिव **कनकशिखरिणम्**–अनेकरत्नाभरण किरण–जालकान्तरितावयव–मिन्द्राशुधासहस्रसंच्छादिताष्टदिग्वि भागमिव जलधार दिवसम्, अशेषजनभोग्यतामुपनीतयाप्यसा–धारणया राजलक्ष्म्या समालिङ्गितम्, एकदेशस्थितमपि व्याप्तभुवनमण्डलम्, आसने स्थितमपि धनुषि निषण्णम्, उत्सादिताशेषद्विषदिन्धनमति ज्वलत्प्रतापानलम्, आयत–लोचनमपि सूक्ष्मदर्शनम् महादोषमपि सकलगुणाधिष्ठानम्, कुपतिमपि कलत्रवल्लभम्, अविरलप्रवृत्तदानमप्यमदम् अतिशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम्, अकरमपि हस्तस्थित सकलभुवनतलं राजानमद्राक्षीत्।

(ग) अस्ति पूर्वापरजलनिधिवेलावलग्ना, मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवः वनकरिकुलमदजलसेकसंवर्धितैर–तिविकचधवलकुसुम–निकरमत्युच्चयतय तारागणमिव शिखरदेशलग्नमुद्वहद्भिः पादपैरूपशोभिता, <u>प्रेताधिपनगरीव</u> सा सन्निहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठता च, समरोद्यतपताकिनीव बाणासनारोपितशिलीमुखा विमुक्तसिंहनादा च, कात्यायनीव प्रचलित खड्गभीषणा

रक्तचन्दना–लङ्कृता च, चन्दमूर्तिरिव सततमृक्षसार्थानुगता हरिणाध्यासिता च, चन्द्रमूर्तिरिव सततमृक्षसार्थानुगता हरिणाध्यासिता च, पानभूमिरिव प्रकटित मधुकोशशता प्रकीर्णविविध कुसुमा च, क्वचिदम्बरश्रीरिव व्याधानुगम्यमान तरलतारकमृगा, अपरिमितबहलपत्रसञ्च यापि सप्तपर्ण भूषिता, क्रूरसत्वापि मुनिजनसेविता, पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवीनाम।

(घ) अधुनापि यत्र **जलधरसमये** गम्भीरमभिनवजलधर–निवहनिनादमाकर्ण्य भगवतो रामस्य त्रिभुवनविवरव्यापिनश्चाप–घोषस्य स्मरन्तो न गृहणन्ति शव्पकवलमजस्रम–श्रुजललुलित–दीनदृष्टयो वीक्ष्य शून्या दशदिशो जराजर्जरितविषाण–कोटयो जानकी सवर्धिता जीर्णमृगाः। यस्मिन्ननवरतमृगयानिहत शेषवनहरिण–प्रोत्साहित इव कृतसीता विप्रलम्भः कनकमृगो राघवतिदूरं जहार। अत्यायतश्च यस्मिन् दशरथसुत–शरनिपातितो योजनबाहोर्बाहुरगस्त्य प्रसादनागतन–हुषाजगरकाय–शङ्कामकरोदृष्टिजनस्य। जनकतनया च भर्त्रा विरहविनोदार्थमुदसाभ्यन्तरलिखिता यत्र रामनिवास दर्शनोत्सुका पुनखि धरणीतलादुल्लसन्ती वनचरैरद्याप्यालोवयते।

2. किसी एक गद्यखण्ड की संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8

(क) यश्च मनसि धर्मेण, कोपे यमेन, प्रसादे धनदेन, प्रतापे वह्निना, भुजे भुवा, दृशिश्रिया, वाचि सरस्वत्या, मुखे शशिना, बले मरुता, प्रज्ञायां सुरगुरूणा, रूपे मनसिजेन, तेजसि सवित्रा च वसता सर्वदेवमयस्य प्रकटितविश्वरूपाकृतेरनुकरोति स्म भगवतो नारायणस्य।

(ख) स तस्याञ्च विजिताशेषभुवनमण्डलतया विगतराज्य चिन्ताभारनिर्वृतः, वीलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्न, अमरगुरूमपि प्रज्ञयोपहसद–भिरनेककुलक्रमागतै रसकृता लोचित नीतिशास्त्र–निर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः, समानवयोविद्यालङ्कारैरनेक मूर्द्धाभिषिक्त पार्थिव–कुलोदि्गतैः, केसरिकिशोरकैरिव, विक्रमैकरसैरपि विनयव्यवारिभिरात्मनः प्रतिबिम्बैरिव राजपुत्रैः सह रममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास।

3. प्रश्न संख्या 1 के रेखाङ्कित पदों में से किन्हीं दो का समास–विग्रह एवं समास का नाम लिखिये। $2 \times 2 = 4$

4. कादम्बरी कथामुखम् के चम्पासरोवर वर्णन का सारांश लिखिये। 7

अथवा

कादम्बरी के अपने पठितांश के आधार पर 'बाणस्तु पञ्चाननः' इस उक्ति की अन्वर्थकता सिद्ध कीजिये।

5. अधोलिखित में से किसी **एक पद्य** का हिन्दी में अनुवाद करिये : 8

कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्रामबन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितंमानसोत्काः
आ कैलासद्विसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः,
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः।

अथवा

छन्नोवान्तः वरिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै–
स्त्वय्यारूढे शिखरमवलः स्निग्धवेणी सवर्णे।
नूनं यास्यत्यभरमिथुनप्रेक्षणीयाभवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारापाण्डुः।।

6. अधोलिखित श्लोक की संस्कृत में व्याख्या कीजिए 7

मन्दं–मन्दं नुदति पवनाश्चानुकूलो यश्रात्वां,
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणरिचयान्नूनबद्धमालाः,
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः

अथवा

त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्वध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्ष्या संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2014

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न के निर्धारित अंक उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– 3×6=18

(क) स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

(ख) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,

यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात् ।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो

यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः ।।

(ग) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।

(घ) य आत्मदा बलदा यस्य विश्वे

उपासते प्रशिषं यस्य देवा :

यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः

कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(ङ) सुषारथिर श्वानिव यन्मनुष्या

न्नेनीयते ऽभीशुभिर्वाजिन इव ।

हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।।

2. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए : 2 × 2 = 4

(क) वृद्धश्रवाः ।
(ख) विश्ववेदाः
(ग) व्यथमानाम् ।
(घ) नेनीयते ।
(ङ) विममे ।
(च) अदृंहत् ।

3. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर विश्वेदेवासूक्त अथवा शिवसंकल्पसूक्त को सारांश लिखिए । 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग विशद व्याख्या कीजिए । 2 × 6 = 12

(क) शान्तसङ्कल्पः समुना यथा स्याद्,
वीतमन्युर्गोतमो माभि मृत्यो ।
त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीत
एकत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ।।

(ख) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते ।
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ।।

(ग) श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः,
शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्यु :।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाश्चर्यो
ज्ञाता कुशलानुशिष्टः ।।

(घ) यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः ।
मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः ।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिये । 2½ × 2 = 5

(क) इष्टापूर्ते
(ख) सृङ्काम्
(ग) श्रेयः प्रेयः
(घ) योगक्षेमम्

Vansh Dwivedi Helping Hand

6. अधोलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का समुचित विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए : 5 × 1 = 5

(क) गोतम ऋषि द्रष्ट सूक्त है :

(i) पुरूषसूक्त (ii) वाक्सूक्त

(iii) विश्वेदेवासूक्त (iv) इन्द्रसूक्त

(ख) शिवसंकल्प सूक्त के देवता हैं :

(i) विष्णु (ii) इन्द्र

(iii) प्रजापति (iv) मनस्

(ग) नचिकेता के पिता का नाम है–

(i) यम (ii) वाजश्रवस

(iii) विवस्वान (iv) वाजश्रवस्

(घ) चवर्ग का उच्चारण स्थान है–:

(i) कण्ठ (ii) तालु

(iii) दन्त (iv) ओष्ठ

(ङ) वृद्धिसंज्ञा विधायक सूत्र है–

(क) वृद्धिरेचि (ख) अदेङ्गुणः

(ग) वद्धिरादैच् (घ) अकः सवर्णे दीर्घः

SANSKRIT (THIRD PAPER)-2014

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

निर्देश : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं

इकाई–एक

1. संस्कृत महाकाव्य के उद्‌भव और विकास पर संक्षिप्त तथा सारगर्भित लेख लिखिये। 10

अथवा

संस्कृत चम्पू काव्यधारा के विकास पर एक समीक्षात्मक निबन्ध प्रस्तुत कीजिये।

इकाई–दो

2. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर लघु टिप्पणी लिखिए– 2×5=10

(क) किरातार्जुनीयम्

(ख) माघ

(ग) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(घ) मुद्राराक्षस्

(ङ) बाणभट्ट

इकाई–तीन

3. अधोलिखित में से किन्हीं दो में सूत्रोल्लेख पूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिये–2×3=6

(क) मनीषा

(ख) दैवैश्वर्यम्

(ग) ब्रह्मर्षिः

(घ) रामश्शेते

(ङ) वागीशः

(च) विष्णुस्त्राता

इकाई–चार

4. (क) सूत्रों का उल्लेख करते हुए दो की सन्धि पूर्वक साधनिका लिखिये– 2 × 4 = 8

(क) सुधी + उपास्य :

(ख) गो + यूति :

(ग) उप + एति

(घ) दैत्य + अरि

(ख) निम्नलिखित सूत्रों में से किन्हीं दो की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए– 2 × 2 = 4

(क) वृद्धिरेचि

(ख) ष्टुना ष्टु :

(ग) अचोऽन्त्यादि टि

(घ) वा शरि

(ग) किन्हीं दो संज्ञाओं का सोदाहरण परिभाषित कीजिए– 2×1=2

(क) गुण

(ख) इत्

(ग) लोप

(घ) आम्रेडित

इकाई–पाँच

5. (क) अधोलिखित में से किन्हीं चार में धातु और प्रत्यय विभक्त कीजिए– $1 \times 4 = 4$

(क) गृहीतः

(ख) गच्छन्

(ग) शोभमानः

(घ) कृत्वा

(ङ) उपास्य

(च) ग्रहणीयम्

(छ) देयम्

(ज) धार्यम्

(ख) निम्नलिखित धातु–प्रत्यय समूह से निष्पन्न शब्दों में से किन्हीं चार शब्दों का उल्लेख कीजिए। $4 \times 1 = 4$

(क) गम् + क्त

(ख) दृश् + शतृ

(ग) वृत् + शानच्

(घ) कृ + तव्यत्

(क) पठ् + अनीयर्

(ख) ग्रह् + क्तवतु

(ग) चल् + तुमुन्

(घ) भू + यत्

(ग) निम्नाङ्कित में से किन्हीं दो में–स्त्री–प्रत्यय का निर्देश कीजिए– $2 \times 1 = 2$

(क) अजा

(ख) नर्तकी

(ग) गोपी

(घ) संहितोरू :

B.A. (Part II) Examination, 2015

SANSKRIT (FIRST PAPER)

(New Course)

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्नों का यथानिर्देश समाधान करें।

1. निम्नांकित में से किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद करें–$8 \times 2 = 16$

(क) आसीद शेष नरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमालात्मेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्त चक्रः, चक्रधर इव करकमलोपलक्ष्यमाणशङ्खचक्रलाञ्छन :, रविरिव प्रतिदिवसोपजायमानोदयः, मेरुरिव सकलभुवनोपजीव्य–मानपादच्छायः दिग्गज इवानवरतप्रवृत्तदानार्द्रीकृतकरः, कर्त्ता महाश्चर्याणामाहर्ता क्रतूनामादर्शः सर्वशास्त्राणामुत्पत्तिः कलानाम् कुलभवनं गुणानामा गमः काव्यामृतरसानामुदयषैलो मित्रमण्डलस्य उत्पातकेतु रहित जनस्य,वैनतेय इव विनतानन्दजननः, वैन्य इव चापकोटिसमुत्सारितसकलाराति कुलाचलो राजा शूद्रको नाम।

(ख) एकदा तु नातिदूरोदिते नवनलिनदलसम्पूटभिदि किञ्चिदुन्मुक्त पाटलिम्नि भगवति सहस्रमरीचिमालिनि राजानमास्थानमण्डप गतमङ्गनाजनविरुद्धेन वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेण सन्निहितविषधरेव चन्दनलता भीषणरमणीयाकृतिः अविरलचन्दनानुलेपनधवलितस्तनतटोन्मज्जादैरावतकुम्भमण्डलेव मन्दाकिनी, चूडामणिप्रतिबिम्बच्छलेन राजाज्ञेव मूर्तिमती राजभिः शिरोभिरूह्यमाना, शरदिवकलहंसधवलाम्बरा, जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृतसकलराजमण्डला, विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्रलतावती, राज्याधिदेवतेव विग्रहिणी प्रतीहारी समुपसृत्य क्षितितलनिहितजानुकरकमला सविनयमब्रवीत्।

Vansh Dwivedi Helping Hand
Shilpi

(ग) एवं च क्रमेण निर्वर्तिताभिषेको विषधरनिर्मोकपरिलघुनी धवले परिधाय धौतवाससी शरदम्बरैकदेश इव जलक्षालनविमलतनुरतिधवलजलधरच्छेदशुचिना दुकूलपटपल्लवेन तुहिनगिरिरिव गगनसरित्स्रोतसा कृतशिरोवेष्टनः संपादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। उपरचितपशुपतिपूजनश्च निष्क्रम्य देवगृहान्निर्वर्तिताग्निकार्यो विलेपनभूमौ मृगमदकर्पूरकुङ्कुमवाससुरभिणा चन्दनेनानुलिप्तसर्वाङ्गो विरचितामोदिमालती कुसुमशेखरः कृताम्बरपरिवर्तो रत्न कर्णपूरमात्राभरण समुचितभोजनैः सहभूपतिभिराहारमभिमतरसास्वाद जातप्रीतिरवनिपो निर्वर्तयामास।

(घ) तस्य चैवविधस्य सम्प्रत्यपि प्रकटोपलक्ष्यमाणपूर्ववृत्तान्तस्यागस्त्याश्रमस्य नातिदूरे जलनिधिपान प्रकुपितवरुणोत्साहितेनागस्त्यमत्सरात्तदाश्रमसमीपवर्त्यपर इव वेधसा महाजलनिधिरुत्पादितः प्रलयकालविघटिताष्टदिग्भागसन्धिबन्धं गगनतलमिव भुवि निपतितम् आदि वराहसमुद्धृधरामण्डल स्थानमिव सलिलपूरितम् अशङ्कितावतीर्णाभिरम्भः क्रीडारागिणीभिः स्नानसमये वनदेवताभिः केशपाशकुसुमैः सुरभीकृतम्. उपतटविट पिप्पल्लवानिलवीजितम्, अपरसागरशिङ्किभिः सलिलमादातुमवतीर्णैर्जल धरैरिव बहलपङ्कमलिनैर्वनकरिभिरनवरतमा पीयमानसलिलम् गाधमनन्तमप्रतिमपां निधाने पम्पाभिधानं पद्मसरः।

2. किसी **एक** गद्यखण्ड की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8

(क) आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्तकुवलयदलकोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिममाजघान। येन सकलमेव तद्राजकमेकपदे वनकरियूथमिव तालशब्देन तेन वेणुलताध्वनिना युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुखमासीत्।

(ख) "प्रायेण हि पक्षिणः पशवश्च भयाहारमैथुननिद्रासंज्ञामात्रवेदिनो भवन्ति। इदन्तु महाच्चित्रम्।" इत्युक्तवति भूभुजि कुमारपालितः किञ्चित्स्मितवदनो नृपतिमवादीत्।" देव किमत्र चित्रम्। एते हि शुकसारिका प्रभृतयो विहंगमविशेषा यथाश्रुतां वाचमुच्चारयन्तीत्यधिगतमेव देवेन। तत्राप्यन्यजन्मोपात्तसंस्कारानुबन्धेन वा पुरुषप्रयत्नेन वा संस्कारातिशय उपजायत इति नातिचित्रम्। अन्य देतेषामपि पुरा पुरुषाणामिवातिपरिस्फुटाभिधाना बागासीत्। अग्निशापात्त्वपरियुस्फुटालापता शुकानामुपजाता करिणां च जिह्वा परिवृत्तिः।"

3. प्रश्न संख्या **एक** अधोरेखाङ्कित पदों में से किन्हीं **दो** का समास तथा समास–विग्रह का नाम लिखिये। 2 × 2 = 4

4. पठित अंश के आधार पर पम्पासरोवर का वर्णन कीजिए। 7

अथवा

"बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" की अन्वर्थकता सिद्ध कीजिए।

5. नीचे लिखे श्लोकों में से किसी **एक** का हिन्दी में अनुवाद शेष में से किसी एक की सन्दर्भ सहित संस्कृत व्याख्या कीजिए– 8+7=15

(क) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।

(ख) तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तदृष्टि
र्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः।
अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलःशक्ष्यति त्वां
रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।।

(ग) वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लीलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2015

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न के निर्धारित अंक उनके सामने प्रदर्शित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– 3×6=18

(क) यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्
यो गा उदाजदपधा बलस्यं।
यो अश्मनोरन्तग्निं जजान
संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः।।

(ख) हिरण्यगर्भः समवर्ततागे्र भूतस्य

जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां

कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(ग) चन्द्रमा मनसो जातश् चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।।

(घ) अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां।

चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।।

तां मा देवा व्यदधुः पुरूत्रा

भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीन्।।

(ङ) यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं

तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

2. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए : 2 × 2 = 4

(क) अश्मनोः
(ख) उदाजत्
(ग) दाधार
(घ) जजान
(ङ) सङ्गमनी
(च) सङ्कल्पम्

3. अपनी पाठ्य पुस्तक के आधार पर इन्द्रसूक्त अथवा वाक्सूक्त का सारांश लिखिए। 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग विशद व्याख्या कीजिए। 2 × 6 = 12

(क) स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति
न तत्र त्वं न जरया विभेति।
उभे तीत्वार्ऽशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(ख) अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेय
स्ते उभे नानार्थे पुरूषं सिनीतः।
तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति
हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते।।

(ग) अणोरणीयान् महतो महीया
नात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको
धातुप्रसादान्महिमानामात्मनः।।

(घ) एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिये। 2½ × 2 = 5

(क) उपनिषद्
(ख) सर्ववेदसम्
(ग) छायातपौ
(घ) त्रिणाचिकेताः

अथवा

नचिकेता द्वारा माँगे गए तीनों वरों का विवेचन कीजिए।

6. अधोलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का समुचित विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए : 5 × 1 = 5

(क) विष्णु–सूक्त के देवता हैं :
(i) प्रजापति
(ii) कृष्ण
(iii) विष्णु
(iv) रूद्र

(ख) हिरण्यगर्भ ऋषि द्वारा दृष्ट सूक्त है :
(i) इन्द्रसूक्त
(ii) तद्सूक्त
(iii) वरूणसूक्त
(iv) हिरण्यगर्भसूक्त

Vansh Dwivedi Helping Hand

(ग) नचिकेता द्वारा प्रार्थित तीसरा वर है :
(i) आत्मज्ञान
(ii) भक्तिज्ञान
(iii) ज्योतिषज्ञान
(iv) भौतिकज्ञान

(घ) क–वर्ग का उच्चारण स्थान है :
(i) मूर्धा
(ii) कण्ठ
(iii) तालु
(iv) दन्त

(ङ) सवर्ण संज्ञा का विधायक सूत्र है :
(i) तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्
(ii) वृद्धिरादैच्
(iii) अकः सवर्णे दीर्घः
(iv) अदेङ् गुणः

SANSKRIT (THIRD PAPER)-2015

Time : Three hours] [Maximum Marks : 5

निर्देश : सभी प्रश्न अनिवार्य है।

इकाई – एक

1. संस्कृत–खण्डकाव्य के उद्भव एवं विकास पर निबन्ध लिखिये। 10

अथवा

जन्तु कथा साहित्य पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

इकाई–दो

2. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए– 5×2=10
(क) कुमारसम्भवम्
(ख) भारवि
(ग) सुबन्धु
(घ) भवभूति
(ङ) हर्षचरितम्

इकाई–तीन

3. अधोलिखित में से किन्हीं दो में नियम–निर्देशपूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिये– 3×3=9
(क) कृष्णर्द्धिः
(ख) अक्षौहिणी
(ग) गवाग्रम्
(घ) एतन्मुरारिः
(ङ) शिवोवन्द्यः

इकाई–चार

4. (क) सूत्रोल्लेखपूर्वक किन्हीं दो की सन्धि कीजिये– 2 × 2 = 4
(i) गङ्गा + ओघः
(ii) शाम् + तः
(iii) हरे + ए
(iv) हरिम् + वन्दे
(v) होतृ + ऋकार :

(ख) अधोलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए–2 × 2 = 4
(i) एङः पदान्तादति।
(ii) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्
(iii) स्तोश्चुनाश्चुः
(iv) झलां जशोऽन्ते

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं दो संज्ञाओं का सोदाहरण परिचय दीजिए–
(i) संहिता 1½+2=3
(ii) पररूप
(iii) वृद्धि
(iv) धातु
(v) प्रगृह्य

इकाई–पाँच

(क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार में धातु एवं प्रत्यय स्पष्ट कीजिये– 4 × 1 = 4

(i) दातव्यम् (ii) पचनीयम्
(iii) शक्तम् (iv) त्यक्तवान्
(v) गत्वा (vi) पाकः
(vii) अवगत्य

(ख) निम्नलिखित धातु–प्रत्यय समूह से निष्पन्न होने वाले किन्हीं चार शब्दों का उल्लेख कीजिये– 4 × 1 = 4

(i) भुज् + तव्यत्
(ii) हन् + क्त्वा
(iii) लिख् + अनीयर्
(iv) लभ् + शानच्
(v) दृश् + तव्यत्
(vi) हस् + तुमुन्
(vii) भू + क्त

(ग) निम्नांकित में से किन्हीं दो में स्त्री प्रत्यय का निर्देश कीजिये–2× 1 = 2

(i) कुरुचरी
(ii) अजा
(iii) स्तुति
(iv) गोपी

B.A. (Part-II) Examination, 2016

Three Years Degree Course

Sanskrit

First Paper
(New Course)

Time : 3 Hours] [M.M. : 50

निर्देशः सभी प्रश्नों का यथा निर्देश समाधान करें।

1. निम्नाङ्कित में से किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 8 × 2=16

(क) प्रविश्य च सा अवलम्बितस्थूलमुक्ताकलापस्य कनक शृखङ्लानियमितमाणिदण्डिकाचतुष्टयस्य गगनसिन्धुफेन-पटल पाण्डुरस्य नातिमहतो दुकूलवितानस्याधस्तादिन्दुकान्त–मणिपर्यङ्किकानिषण्णम् , अशेषजनभोग्य तामुपनीयाप्यसाधारणया राजलक्ष्म्या समालिङ्गतम्, अपरिमित परिवारजनमप्यद्वितीयम् अनन्तगज तुरग साधनमपि खड्गमात्रसहायम्, एकदेशस्थितमपि व्याप्तभुवनमण्डलम्, आयतलोचनमपि सूक्ष्मदर्शनम्, अविरतप्रवृत्तदानमप्यमदम्, अतिशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम्, राजनमद्राक्षीत्।

(ख) परिपीतधूमवर्त्तिरूपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलः, अभ्यन्तरसञ्चारसमुचितेन परिजनेनानुगम्यमानः, उत्कीर्ण शालभञ्जिका निवहेन सन्निहितगृहदेवतेनेव,गन्ध-सलिलक्षालितेन कलधौतमयेन स्तम्भसञ्चयेन विराजमानम्, अतिबहलागुरूधूपपरिमलंम्, अखिलविगलित जल निवह धवलजलशकलानुकारिणा कुसुमामोदवासित-प्रच्छदपटेन, पट्टोपधानाध्यासितशिरोभागेन मणिमय-प्रतिपादुकाप्रतिष्ठितपादेन पार्श्वस्थरत्नपादपीठेन तुहिनगिरिशिलातलसहशेन शयनेन सनाथीकृतवेदिकं भुक्त्वास्थानमण्डपमयासीत् ।

(ग) अस्ति पूर्वापरजलनिधिवेलावलग्ना मध्य देशालङ्कार भूता मेखलेव भुवः, मदकलकुररकुलदश्यमानमरिचपल्लवा, अति चपलकपिकुलकम्पित कक्कोलच्युत पल्लवफलशबलैः अनवरतनिपतित कुसुमरेणु पांशुलैः, पथिकजनरचितलवङ्ग पल्लव संस्तरैः अतिकठोर नारिकेल केतकीकरीरबकुल परिगत प्रान्तैः, ताम्बूलीलतावनद्ध पूगषण्ड मण्डितैर्वन लक्ष्मी वास भवनैरिव विराजिता लतामण्डपैः, उन्मदमातङ्ग कपोलस्थलगलित सलिलसिक्तेनेव निरन्तरमेलालता वनेन मदगन्धिनान्धकारिता, नखमुखलग्नेभकुम्भ-मुक्ताफललुब्धैः शबर सेनापति भिहन्यमान केसररिशता, विन्ध्याटवी नाम।

(घ) इतश्चेतश्च निष्पतन्तीनां स्कन्धावसक्तचामराणां चामरग्राहिणीनाम् कमलमधुपान-मत्तजरत्कलहंसनादजर्जरिण पदे पदे रणितभणीनां नूपुरमणीनां निनादेन, रसनारसितोत्सुकितानां च तारतरविराविणामुल्लिख्यमान कांस्य केङ्कारदीर्घेण गृहसारसानां कूजितेन, सरभस प्रचलि तसामन्तशतचरणतलाभिहतस्य चास्थानमण्डपस्य निर्घोषगम्भीरेण पद प्रवृत्तैखनिपतिभिः केयूरकाटिताऽिवानां क्वाणितमुखररत्रदाम्नां च मणिस्तम्भावां रणितेन सर्वतः क्षुभितमिव तदास्थान भवनमभवत् ।

2. किसी एक गद्यखण्ड की ससन्दर्भ संस्कृत में व्याख्या कीजिए। 8

(क) देव? किं वा नाम्वादितम्? आपत्तकोकिललोचनच्छविर्नील पाटल: काषाय मधुर: प्रकाममापी तो जम्बूफलग्म, हरिनखर भिन्नमत्तमातङ्गकुम्भमुक्तरक्तार्द्रमुक्ताफलत्वीषि खण्डितानि दाडिमबीजानि नलिनीदलहरिन्ति द्राक्षाफलस्वादूनि च दलितानि स्वेच्छया प्राचीनामलकी फलानि।

(ख) यत्र च दशरथवचनमनुपालयन् त्यक्तराज्यो दशवदनलक्ष्मी विभ्रमविरामो रामो महामुनिमगस्त्यमनुचरन् सह सीतया लक्ष्मणोपरचितरुचित पर्णशाल: पञ्चवट्यां कञ्चित् कालं सुखमुवास। चिरशून्ये अद्यापि यत्र शाखानिलीननिभृत पाण्डुकपोत पङ्क्तयो लग्नतापसाग्निहोत्रधूमराजय इव लक्ष्यन्ते तरवः।

3. प्रश्न संख्या एक के अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो का समास विग्रह एवं समास का नाम लिखिये। $2 \times 2 = 4$

4. पठित अंश के आधार पर 'अगस्त्य आश्रम' का वर्णन कीजिए। 7

अथवा

गद्य साहित्य में बाणभट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. नीचे लिखे श्लोकों में से किसी एक का हिन्दी अनुवाद तथा शेष में से किसी एक की ससन्दर्भ संस्कृत व्याख्या कीजिए। $8 + 7 = 15$

(क) उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे! मत्प्रियार्थं यियासो:
कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते।
शुक्लापाङ्गैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केका:
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान् गन्तुमाशु व्यवस्येत् ।।

(ख) मार्गं तावच्छृणु कथयतस्त्वत्प्रयाणानुरूपं
सन्देशं मे तदनु जलद! श्रोष्यसि श्रोत्र पेयम् ।
खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य ।।

(ग) प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम् ।
स प्रत्यग्रैः कुटज कुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।।

Second Paper - 2016
Sanskrit

Time : 3] [M.M. : 50

निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने दर्शित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं तीन का अनुवाद हिन्दी भाषा में कीजियेः $3 \times 7 = 21$

(क) तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे।
रक्षिता वायुरदब्धः स्वस्तये।।

(ख) तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां
नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था
विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।।

(ग) यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोर-
मुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति
श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।।

(घ) नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ।।

(ङ) यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

2. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखियेः $2 \times 2 = 4$

(क) धियञ्जिन्वम् । (ख) देवयवः (ग) विज इव (घ) शीर्ष्णो (ङ) प्रज्ञानम्

3. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रजापति सूक्त अथवा विष्णु सूक्त का सारांश लिखिये। 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजियेः $2 \times 7 = 14$

(क) त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं
त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू।
ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा
निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति।।

(ख) न नरेणावरेण प्रोक्त एष
सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः।
अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्ति;
अणीयान् ह्यतर्क्यमणु प्रमाणात् ।।

(ग) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम् ।
अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं
मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।।

(घ) इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिये। $2 \times 2\frac{1}{2} = 5$

(क) आशाप्रतीक्षे। (ख) सृङ्का।
(ग) श्वोभावा। (घ) श्रेयः प्रेयः

अथवा

कठोपनिषद् में वर्णित रथरूपक का विवेचन कीजिये।

Vansh Dwivedi Helping Hand

Third Paper - 2016
Sanskrit

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य है।

इकाई- एक

1. संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति एवं विकास पर एक निबन्ध लिखिये। 10

अथवा

चम्पू काव्य की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए किन्हीं दो चम्पू काव्यों का विवेचन कीजिए।

इकाई- दो

2. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये: 2×5=10

(i) विक्रमोर्वशीयम् (ii) श्रीहर्ष (iii) अम्बिका दत्त व्यास (iv) शूद्रक (v) हितोपदेश

इकाई तीन

3. अधोलिखित में से किन्हीं दो में नियम-निर्देशपूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए। 2×3=6

(i) नायकः (ii) उपेन्द्रः (iii) प्रार्च्छति (iv) सच्चित् (v) वाग्घरिः

इकाई- चार

4. (क) सूत्रोल्लेखपूर्वक किन्हीं दो की सन्धि कीजिये: 2×4=8

(i) गो + यम् (ii) हरे + इह (iii) विष्णो + अव (iv) तत् + टीका (v) हरिः + शेते

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 2×2=4

(i) अलोऽन्त्यस्य (ii) स्थानेऽन्तरतमः (iii) यथासंख्यमनुदेशः समानाम् (iv) आद्यन्तौ टकितौ

(ग) किन्हीं दो संज्ञाओं की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 2×1=2

(i) दीर्घ (ii) उदात्त (iii) अनुनासिक (iv) आम्रेडित

इकाई-पाँच

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार में धातु एवं प्रत्यय स्पष्ट कीजिये। 4×1=4

(i) चेतव्यम् (ii) देयम् (iii) स्तुत्यः (iv) कारकः (v) कुरूचरः (vi) कृतवान् (vii) यजमानः

(ख) निम्नलिखित धातु प्रत्यय समूह से निष्पन्न होने वाले किन्हीं चार शब्दों का उल्लेख कीजिए। 4×1=4

(i) पद् + तव्यत् (ii) कृ + क्तवा (iii) गम् + शतृ (iv) नी + ल्युट् (v) पच् + क्त (vi) वृत् + शानच् (vii) रूद् + तुमुन्

(ग) निम्नांकित में से किन्हीं दो में स्त्री प्रत्यय का निर्देश कीजिए। 2×1=2

(i) सर्वा (ii) भवन्ती (iii) नर्तकी (iv) सूर्या

B.A. (Part II) Examination, 2017

Three-year Degree Course

SANSKRIT
Paper - First

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

Note : सभी प्रश्नों का यथोचित उत्तर दें।

1. निम्नाङ्कित में से किन्हीं दो गद्यखण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये। 8×2=16

(क) यस्य च मदकल करिकुम्भपीठपाटनमाचरता लग्नस्थूल-मुक्ताफलेन, दृढ़मुष्टिनिष्पीडननिष्च्यूतधाराजल बिन्दुदन्तुरेणेव, कृपाणेनाकृष्यमाणा, सुभटोरःकपाटविघटितकवचसहस्रान्धकारमध्यवर्तिनी, करिकरटगलितमदजलासारदुर्दिनासु अभिसारिकेव समर निशासु समीपम् असकृदाजगाम राजलक्ष्मीः। यस्य च हृदयस्थितानपि पतीन् दिधक्षुरिव प्रतापानलोवियोगिनीनामपि-सुन्दरीणामन्तर्जनितदाहो दिवानिशं जज्वाल।

(ख) अस्ति राज्य स्थितिरिव चमरमृगबालव्यजनोपशोभिता, समद गजघटा परिपालिता च, गिरितनयेवस्थाणुसंगता मृगपतिसेविता च, जानकीवप्रसूतकुशलवानिशाचर परिगृहीता च, कामिनीव चन्दनम्मृगमदपरिमलवाहिनी, रूचिरागुरूतिलकभूषिता च, सोत्कण्ठेव विविध पल्लवानिलवीप्लिता समदना च, बालग्रीवेव व्याघ्रनख पंक्तिमण्डितागण्डकाभरणा च, पानभूमिरिव प्रकटितमधुकोशकशता प्रकीर्ण विविध कुसुमा च विन्ध्याटवीनाम।

(ग) अधुनापि यत्र जलधर समये गम्भीरमभिनवजलधरनिवह निनादमाकर्ण्य भगवतो रामस्य त्रिभुवनविवरव्यापिनः चापघोषस्यस्मरन्तो न गृह्यन्ति शष्पकवलमजस्रमश्रु-जललुलितदीनदृष्टयः वीक्ष्य शून्यादशदिशः जराजर्जरितविषाणकोटयो जानकीसंवर्धिता जीर्णमृगाः। यस्मिन्ननवरतमृगयानिहत शेषवनहरिणप्रोत्साहित इव कृतसीताविप्रलम्भः कनकमृगः राघवमतिदूरं जहार।

Vansh Dwivedi Helping Hand

(घ) एकस्मिंश्च जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयासि वर्तमानस्य कथमपि पितुरहमेवैको विधि वशात् सुतुरभवम् । अतिप्रबलया चाभिभूता ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी में लोकान्तरमगमत् । अभिमत जाया विनाशदुःखितोऽपि खलुतातः सुत स्नेहा दन्तर्निगृह्य पटुप्रसरमपिशोकं मेकाकी मत्संवर्धनपरः एवाभवत् ।

2. किसी एक गद्यखण्ड की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिये-

(क) यश्च मनसि धर्मेण, कोपे यमेन, प्रसादे धनदेन, प्रतापे वह्निना, भुजे भुवा, दृशिश्रिया, वाचिसरस्वत्या, मुखे शशिना, बले मरूता, प्रज्ञायां सुरगुरूणा, रूपे मनसिजेन, तेजसि सवित्रा च वसता, सर्वदेवमयस्य प्रकटितविश्व रूपा कृतः अनुकरोति भगवतो नारायणस्य।

(ख) प्रविश्य च या आमोदितमालती कुसुमशेखरम् उषसि शिखर पर्यस्ततारकापुञ्जमिव पश्चिमाचलम्, आभरण प्रभापिशङ्कितङ्गतया लग्नहर हुताशमिवमकरध्वजम् आसन्नवर्तिनीभिः सेवार्थमागताभिः दिग्वधूभिः वारविलासिनीभिः परिवृतम् राजानमद्राक्षीत् ।

3. प्रश्नसंख्या 1 के रेखाङ्कित पदों में से किन्हीं दो का समास विग्रह कीजिये एवं समास का नाम लिखिये। 2×2=4

4. (क) बाण की गद्यशैली की विशेषताओं का वर्णन कीजिये। 7

अथवा

(ख) पठित अंश के आधार पर अगस्त्याश्रम का वर्णन कीजिये।

अधोलिखित श्लोकों में से किसी एक का हिन्दी अनुवाद तथा अवशिष्ट में से किसी एक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिये। 8+7=15

(क) कश्चित्कान्ताविरहगुरूणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः,
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनक तनया स्नान पुण्योदकेषु,
स्निग्धच्छायातरूषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

(ख) तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी,
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं,
वप्रक्रीडापरिणत गजप्रेक्षणीयं ददर्श।।

(ग) धूमज्योतिःसलिलमरूतां सन्निपातः क्वमेघः,
सन्देशार्था क्वपटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्याद परिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे,
कामार्ता हि प्रकृति कृपणानूचेतनाचेतनेषु।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2017

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने अंकित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं तीन का अनुवाद हिन्दी भाषा में कीजिए- 3×7=21

(क) स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

(ख) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदा-

न्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।

य उं त्रिधातु पृथिवीमुत द्या-

मेको दाधार भुवनानि विश्वा।।

(ग) यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो

यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।

यः सूर्यं य उषसं जजान

यो अपां नेता स जनास इन्द्रः

(घ) येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा

येन स्वः स्तभितं येन नाकः

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः

कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(ङ) अहं रूद्रेभिर्वसुभिश्चराम्य

हमादित्यैरूत विश्वदेवैः।

अहं मित्रावरूणोभा बिभर्म्य

हमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।।

2. प्रश्न संख्या 1 में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए- 2×2=4

(क) वृद्धश्रवाः

(ख) अक्षीयमाणा

(ग) अश्वासः

(घ) नाकः

(ङ) रूद्रेभिः

3. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर इन्द्र अथवा पुरूष सूक्त का सारांश लिखिए। 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 2×7=14

(क) आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सूनृताञ्च,

इष्टापूर्ते पुत्रपशूं श्च सर्वान् ।

एतद् वृङ्क्ते पुरूषस्याल्पमेधसो,

यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे।।

(ख) श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्

सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः।

अपि सर्वं जीवितमल्पमेव

तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।।

(ग) अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।

दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

(घ) आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिए-

(क) आशाप्रतीक्षे

(ख) साम्परायः

(ग) विद्या-अविद्या

(घ) शेवधिः

अथवा

नचिकेता द्वारा यम से मांगे गए तीनों वरों पर एक विवेचनात्मक लेख लिखिये।

SANSKRIT (THIRD PAPER)-2017

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

इकाई-एक

1. संस्कृत महाकाव्यों की उत्पत्ति एवं विकास पर एक निबन्ध लिखिये।

अथवा

गद्य-काव्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालते हुये गद्य काव्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

इकाई-दो

2. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये : 2×5=10

(1) अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।

(2) शिशुपालवधम् ।

(3) पञ्चतन्त्र ।

(4) नलचम्पू।

(5) किरातार्जुनीयम् ।

इकाई-तीन

3. अधोलिखित में से किन्हीं दो में नियमनिर्देश पूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए :2×3=6

(i) मद्ध्वारिः।

(ii) गङ्गोदकम् ।

(iii) पेष्टा।

(iv) गोऽग्रम् ।

(v) तच्छिवः

इकाई-चार

4. (क) सूत्रोल्लेख पूर्वक किन्हीं दो की सन्धि कीजिए : 2×4=8

(i) नौ + यम् ।

(ii) कृष्ण + एकत्वम्।

(iii) प्र + एजते।

(iv) शिव + छाया।

(v) पुन + रमते।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए : 2×2=4

(i) संयोगान्तस्य लोपः

(ii) आद्गुणः

(iii) झयो होऽन्यतरस्याम् ।

(iv) हशि च

(ग) किन्हीं दो संज्ञाओं की सोदाहरण व्याख्या कीजिए : 2×1=2

(i) गुण

(ii) सवर्ण

(iii) अनुदात्त

(iv) निपात

इकाई-पाँच

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार में धातु एवं प्रत्यय स्पष्ट कीजिए :4×1=4

(i) कर्तव्यम्

(ii) चेयम्

(iii) कार्यम्

(iv) शिष्यः

(v) गतः

(vi) पठितवान्

(vii) दधत्

(viii) गन्तुम्

(ख) निम्नलिखित धातु प्रत्यय समूह से निष्पन्न होने वाले किन्हीं चार शब्दों का उल्लेख कीजिए : 4×1=4

(i) जि + तव्यत्

(ii) पा + अनीयर्

(iii) धा + यत्

(iv) सेव् + ण्वुल

(v) पठ् + क्त

(vi) मिद् + क्तवतु

(vii) पच् + शतृ

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं दो में स्त्री प्रत्यय का निर्देश कीजिए : 2×1=2

(i) अजा

(ii) गार्गी

(iii) अतिकेशी

(iv) कुरूः

B.A. (Part II) Examination, 2018

Three-year Degree Course

SANSKRIT

First Paper

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

निर्देश : सभी प्रश्नों का यथोचित उत्तर दें।

1. निम्नाङ्कित में से किन्हीं दो गद्य खण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये : 8×2=16

(क) तस्यैव पद्मसरसः पश्चिमे तीरे राघवशरप्रहारजर्जरितजीर्ण तालतरूषण्डस्य च समीपे दिग्गज कर दण्डानुकारिणा जरदजगरेण सततमावेष्टितमूलतया बद्धमहालवाल इव भुवान्तरालविप्रकीर्णेन शाखासंचयेन प्रलयकाल ताण्डव प्रसारित भुजसहस्रमुडुपतिशेखरमिव विडम्बयितुमुद्यतः, अधिपतिरिव दण्डकारण्यस्य, नायक इव सर्ववनस्पतीनाम्, सखेव विन्ध्यस्य, शाखाबाहुमिरूपगुह्येव विन्ध्याटवीमवस्थितो महान् जीर्णः शाल्मीवृक्षः।

(ख) इतश्चेतश्च निष्पतन्तीनां स्कन्धावसक्त चामराणां चामरग्राहिणीनां कमलमधुपानमत्तजरत्कलहंसनाद जर्जरितेन पदे पदे रणितमणीनां मणिनूपुराणां निनादेन, वारविलासिनीजनस्य सञ्चरतो जघनस्थलास्फालनरसितरत्नमालिकानां मेखलानां मनोहारिणा झंकारेण, संक्षोमादतित्वरित पदप्रवृतैर वनिपतिभिः केयूर कोटिताडितानां क्वणितमुखररत्नदाम्नाञ्च मणिस्तम्भानां रणितेन सर्वतः क्षुभितमिव तदास्थानभवनमभवत्।

(ग) स तस्याञ्च विजिताशेष भुवनमण्डलतया विगतराज्य चिन्ता भारनिर्वृतः, द्वीपान्तरागतानेकभूमिपालमौलिमाला ललित चरण युगलः, वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभार मुद्वहन, अमर गुरू मपि नीतिशास्त्र निर्मलमनोभिरलुब्धै स्निग्धैः प्रबुद्धेश्चामात्यैः परिवृतः काव्य नाटकाख्यानकाख्यायिकालेख्यव्याख्यानादिक्रियानिपुणेरति कठिन पीवर स्कन्धोरू बाहुभिरसकृदवदलित समद रिपु गजघटापीठबन्धैः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास।

(घ) राजा तु तां श्रुत्वा संजात विस्मयः सहर्षमासन्नवर्तिनम् अति महार्घ हेमासनोपविष्टम् अमरगुरूमिवाशेष नीति शास्त्र पारगम् अतिवयसमग्रजन्मानमखिलमन्त्रि मण्डल प्रधानममात्यं कुमारपालितनामानब्रवीत-श्रुत मवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे स्वरे च मधुरता! प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम, यदयमसंकीर्ण वर्ण प्रविभागामभिव्यक्त मात्रानुस्वार स्वर संस्कार योगां विशेषयुक्ताम् अतिपरिस्फुटाक्षरां गिरमुदीरयति।

2. किसी **एक** गद्यखण्ड की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिये :

(क) तस्य च राज्ञः कलिकालभयपुञ्जीभूतकृतयुगानुकारिणी त्रिभुवन प्रसवभूमिखि विस्तीर्णा मज्जन्मालवविलासिनी कुचतटास्फालन जर्जरितोर्मिमालया उन्मद कलहंस कुल कोलाहल मुखरित कूलया वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्।

(ख) अथ विसर्जितराजलोको विश्रम्यात् इति स्वयमेवाभिधाय तां चाण्डालकन्यकाम् वैशम्पायनः प्रवेश्यतामम्यन्तरम् इतिताम्बूलकरङ्कवाहिनीमादिश्य कतिपयाप्तराजपुत्रपरिवृतो नरपतिरभ्यन्तरं प्राविशत्।

3. प्रश्न संख्या 1 के रेखाङ्कित पदों में से किन्हीं दो का समास विग्रह कीजिये एवं समास का नाम लिखिये। 2×2=4

4. (क) "वाणी बाणो बभूव" इस कथन की समीक्षा कीजिए। 7

अथवा

(ख) पठित अंश के आधार पर "विन्ध्याटवी वर्णन" का वर्णन कीजिये।

5. अधोलिखित श्लोकों में से किसी **एक** का हिन्दी अनुवाद तथा अवशिष्ट में से किसी एक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या कीजिये। 8+7=15

(क) सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः
सन्देशं में हर धनपतिक्रोधविश्लेषितरस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां,
बाह्योधानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या।।

(ख) मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्ध मालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।।

(ग) विश्रान्तः सन् व्रज वननदीतीरजातानि सिञ्च-
न्नुद्यानानां नवजलकणैर्यूथिकाजालकानि।
गण्डस्वेदापनयनरूजा क्लान्तकर्णोत्पलानां
छायादानात् क्षणपरिचितः पुष्पलावीमुखानाम्।।

SANSKRIT (SECOND PAPER)-2018

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के निर्धारित अङ्क उनके सामने अङ्कित हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **तीन** का अनुवाद हिन्दी भाषा में कीजिए- 3×7=21

(क) तान् पूर्वया निविदा हूमहेवयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।

(ख) विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।

यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः।।

(ग) यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।

ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः।।

(घ) यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।

यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(ङ) अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।

तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।

2. प्रश्न संख्या एक में प्रयुक्त अधोलिखित पदों में से किन्हीं दो पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए- 2×2=4

(क) हूमहे

(ख) विममे

(ग) जघान

(घ) क्रन्दसी

(ङ) सङ्गमनी

3. अपनी पाठ्य पुस्तक के आधार पर 'विष्णुसूक्त' अथवा 'शिवसंकल्पसूक्त' का सारांश लिखिये। 6

4. अधोलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या हिन्दी में कीजिए- 2×7=14

(क) तिस्रो रात्रीर्य दवात्सीर्गृहे मे अनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।

नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतित्रीन्वरान्वृणीष्व।।

(ख) न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा।

जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव।।

(ग) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।

श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

(घ) यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।

ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि।।

5. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिए :

(क) योग क्षेम

(ख) त्रिणाचिकेतः

(ग) इष्टापूर्ते

(घ) सृङ्का

अथवा

कठोपनिषद् के अनुसार 'आत्मा' के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

SANSKRIT (THIRD PAPER) - 2018

Time : Three hours] [Maximum Marks : 50

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

इकाई-एक

1. संस्कृत नाटकों के उद्भव पर प्रकाश डालते हुए नाटक की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 10

Vansh Dwivedi Helping Hand

अथवा

जन्तुकथा साहित्य पर एक समीक्षात्मक निबन्ध लिखिये।

इकाई-दो

2. अधोलिखित में से किन्ही दो पर टिप्पणी लिखिये : 2×5=10

(1) विक्रमोर्वशीयम्

(2) नैषधीयचरितम्

(3) किरातार्जुनीयम्

(4) शूद्रक

(5) त्रिविक्रमभट्ट

इकाई-तीन

3. अधोलिखित में से किन्हीं दो में नियम निर्देश पूर्वक सन्धि विच्छेद कीजिए :2×3=6

(i) नायकः

(ii) मनीषा

(iii) गङ्गोदकम्

(iv) तल्लयः

(v) सुद्ध्युपास्यः

इकाई-चार

4. (क) सूत्रोल्लेख पूर्वक किन्हीं दो की सन्धि कीजिए - 2×4=8

(i) जगत् + शान्तिः

(ii) अनु + आदेशः

(iii) पौ + अकः

(iv) विष्णु + अव

(v) दैत्य + अरिः

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए 2×2=4

(i) एचोऽयवायावः

(ii) मोऽनुस्वारः

(iii) छे च

(iv) रो रि

(ग) किन्हीं दो संज्ञाओं की सोदाहरण व्याख्या कीजिए : 2×1=2

(i) दीर्घ

(ii) प्रगृह्य

(iii) वृद्धि

(iv) इत्

इकाई-पाँच

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार में धातु एवं प्रत्यय स्पष्ट कीजिए: 4×1=4

(i) चेतव्यम्

(ii) अवगत्य

(iii) कृत्वा

(iv) करणीयम्

(v) व्यक्तवान्

(vi) पक्वः

(vii) पठितुम्

(viii) जेयम्

Vansh Dwivedi Helping Hand

(ज) निम्नलिखित धातु प्रत्यय समूह से निष्पन्न होने वाले किन्हीं चार शब्दों का उल्लेख कीजिए : 4×1=4

(i) दृ + ण्यत्

(ii) कृ + तव्यत्

(iii) गम् + अनीयर्

(iv) चि + यत्

(v) पठ् + शतृ

(vi) सेव् + शानच्

(vii) त्यज् + क्तवतु

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** में स्त्री प्रत्यय का निर्देश कीजिए : 2×1=2

(i) सूर्या

(ii) कुरूचरी

(iii) बाला

(iv) हर्त्री

+++

B.A. (Part-II) Examination, 2019

SANSKRIT

FIRST PAPER

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 75

निर्देश : सभी प्रश्नों के समुचित उत्तर दीजिए।

1. अधोलिखित में से **किन्हीं दो** गद्यखण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : **8×2=16**

(क) तस्य च राज्ञः कलिकालभयपुञ्जीतभूतकृतयुगानुकारिणी त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा मज्जन्मालवविलासिनी–कुचतटास्फालनजर्जरितोर्मिमालया जलावामाह–नावतारितजयकुञ्जरकुम्भसिन्दूरसन्ध्यायमानसलिलया उन्मदकलहंसकोलाहलमुखरितकूलया वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्। स तस्याञ्च स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः विक्रमैकरसैरपि विनयव्यवहारिभिरात्मकनः प्रतिबिम्बैरिव राजपुत्रै सह रममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास।

(ख) अपसृते च तस्मिन् स विहङ्गराजो राजाभिमुखो भूत्वा समुन्नमय्य दक्षिणचरणमतिस्पष्टवर्णस्वरसंस्कारया गिरा कृतजयशब्दो राजानमुद्दिश्यार्यामिमां पपाठ–

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।।

राजा तु तां श्रुत्वा संजातविस्मयः सहर्षमासन्नवर्तिनम् अतिमहार्घहेमासनोपविष्टम अमरगुरुमिवाशेष–नीतिशास्त्रपारगम् अतिवयसं कुमारपालितनामानं प्रधानामात्यमब्रवतीत्।

(ग) देव! किमत्र चित्रम्। एते हि शुकसारिकाप्रभृतयो विहङ्गविशेषा याथाश्रुतां वाचमुच्चारयन्ति इत्यधिगतमेव देवेन। तथाप्यन्यजन्मोपात्तसंस्कारानुबन्धेन वा पुरुषप्रत्ययेन वा संस्कारातिशय उपाजायते इति नातिचित्रम्। अन्यच्च एतेषामपि पुरा पुरुषाणामिवतिपरिस्फुटाक्षरा वागासीत्, अग्निशापात्त्वस्फुटालापता शुकानामुपजाता करिणाञ्च जिह्वापरिवृत्तिः। इत्येवमुच्चारयत्येव मध्याह्नशङ्खध्वनिरुदतिष्ठत्।

(घ) यत्र च दशरथवचनमनुपालयन्नुत्सृष्टराज्यो दशवदनलक्ष्मीवि– भ्रमविरामो रामो महामुनिम– गस्त्यमनुचरन् सह सीतया लक्ष्मणोपरचितपर्णशालः पञ्चवट्यां कञ्चित्कालं सुखमुवास। चिरशून्येऽपि यत्र शाखानिलीननिभृतपाण्डुकपोतपङ्क्तयो लग्नतापसाग्निहोत्रधूमराजय इव लक्ष्यन्ते तरवः। बलिकर्मकुसुमान्युद्धरन्त्याः सीतायाः करतलादिव संक्रान्तो यत्र रागः स्फुरति लताकिसलयेषु।

Vansh Dwivedi Helping Hand

2. अधोलिखित मे से **किसी एक** गद्यखण्ड की संस्कृत मे व्याख्या कीजिए 8

(क) श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे स्वरे च मधुरता। प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यं यदयमसङ्कीर्णवर्णप्रविभागामभिव्यक्तमात्रानुस्वारस्वर संस्कारयोगा विशेषयुक्ताम् ः तिपरिस्फुटाक्षरं गिरमुदीरयति। तत्र पुनरपरम् अभिमतविषये तिरश्चोऽपि मनुजस्येव संस्कारवती बुद्धिपूर्वा प्रवृत्तिः। तथाहि अनेन समुत्क्षिप्तदक्षिणचरणेनोच्चार्य जयशब्दमियमार्या मामुद्दिश्य परिस्फुटाक्षरं गीता।

(ख) एववादिनो वचनमाक्षिप्य नरपतिरब्रबीत–आस्तां तावत् सर्वमेवेदम्, अपनयतु नः कुतूहलम्, आवेदयतु भवानितः प्रभृति कात्स्न्र्येनात्मनः जन्मकस्मिन् देशे ? भवान् कथं जातः ? केन वा नाम कृतम ? कथं वेदानामागमः ? कुतः कलाः समासादिताः ? किं हेतुकं जनमान्तरानुस्मरणम् ? उत वरप्रदानम् अथवा विहङ्गवेषधारी कश्चित् प्रच्छन्नो निवससि ? क्व वा पूर्वमुषितम् ? कथं पञ्जरबन्धनम् ? कथं चाण्डालहस्तगमनम् ? इह वा कथम् आगमनम् ?

3. प्रश्न संख्या एक के रेखांकित पदों में से **किन्हीं दो** के विग्रहसहित समासनाम लिखिए। 2+2=4

4. 'गद्य कवीनां निकषं वदन्ति' इस कथन की कादम्बरीकथा के प्रेरिप्रेक्ष्य में व्याख्या कीजिए। 7

अथवा

पठितांश के आधार पर शूद्रकवर्णन का सारांश लिखिए।

5. अधोलिखित में से **किसी एक** गद्यांश का हिन्दी अनुवाद तथा **अवशिष्ट** में से **एक** की संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 8+7=15

(क) त्वामारूढं पवनपदवीमुदगृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः।।

(ख) तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी
मव्यापन्नामबिहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो भ्रातृजायाम्
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।

(ग) वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्या स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।

6. उपनिषदों का सामान्य परिचय देते हुए किसी एक उपनिषद् के प्रतिपाद्य का वर्णन कीजिए। 10

अथवा

किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) संहिता (ख) ब्राह्मणग्रन्थ (ग) आरण्यकग्रन्थ (घ) सामवेद

7. रामायण का सांस्कृतिक महत्व बताइए। 15

अथवा

किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(क) पञ्चतन्त्र (ख) बृहत्कथा (ग) मुद्राराक्षस (घ) शिवराजविजय
(ङ) भास (च) नलचम्पू

SANSKRIT
SECOND PAPER - 2019

Time : Three Hours] **[Maximum Marks : 75**

निर्देश : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अधोलिखित मन्त्रों में से **किन्हीं तीन** का अनुवाद हिन्दी भाषा में कीजिए 3×7=21

(क) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।

(ख) यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्य य उषस जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः।।

(ग) यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(घ) अहं रूद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावां पृथिवी आ विवेश।।

(ङ) यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

2. प्रश्न संख्या एक में प्रयुक्त हुए अधोलिखित पदों में से **किन्हीं दो** पर व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए : 2×2=4

(क) अप्रायुवः
(ख) जजान
(ग) विधेम

(घ) शरवे

(ङ) प्रज्ञानम्

3. अपनी पाठ्य पुस्तक के आधार पर 'इन्द्रसूक्त' अथवा 'वाक्सूक्त' का सारांश लिखिए। 5

4. अधोलिखित में से **किन्हीं दो** की हिन्दी में सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए : $2\times7=14$

(क) स्वर्गे लोके न भय किञ्चनास्ति
न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(ख) येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये-
ऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाह
वराणामेष वरस्तृतीयः।।

(ग) अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

(घ) अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः।।

5. अधोलिखित में से **किन्हीं दो** पर व्याख्यात्मक टिप्पणी लिखिए : $2\times3=6$

(क) रथ–रूपक

(ख) आशा–प्रतीक्षा

(ग) श्वोभावाः

(घ) अध्यात्मयोग

अथवा

कठोपनिषद् में तीनों वरों तथा उनके विशिष्ट क्रम का रहस्य स्पष्ट कीजिए।

6. **किन्हीं दो** सूत्रों की व्याख्या कीजिए : $2\times5=10$

(क) स्थानेऽन्तरतमः

(ख) उपसर्गाः क्रियायोगे

(ग) स्तोः श्चुना श्चुः

(घ) मोऽनुस्वारः

7. अधोलिखित पदों में से किन्हीं तीन की साधनिका प्रस्तुत कीजिए : $3\times5=15$

(क) लाकृतिः
(ख) गङ्गाधः
(ग) रामष्टीकते
(घ) तच्छिवः
(ङ) शिवोऽर्च्यः
(च) उपेन्द्रः

Vansh Dwivedi Helping Hand